गणपति के आसन से ही मिलेगा सिंहासन

किसी भी व्यक्ति के बैठने के तरीके से उसके वर्तमान, भूत और भविष्य की मानसिक संरचना का पता चलता है। ज्योतिषि या भविष्य वक्ता इन बातों पर गौर करते और आने वाले समय में परिवर्तन की बात सामने वाले को बता देते। हो सकता है कि ये बातें कर्मों अनुसार परिवर्तित हो भी जाएं परंतु पिछले जन्म का भाव कुछ न कुछ रह ही जाता है। उसी प्रकार देवताओं के चित्रों में कुछ आध्यात्मिक रहस्यों को लेकर चित्रकार उनके भावों को दर्शाने का प्रयास करता है, लेकिन उसके आध्यात्मिक रहस्य को समझना अति आवश्यक है, तभी हम उस भाव के साथ निर्णय कर पायेंगे।

आपने देखा होगा कि गणपति जब बैठे होते हैं तो उनके दाहिने पाँव का थोड़ा सा भाग पृथ्वी को स्पर्श कर रहा होता है जबकि बाईं टांग ऊपर की ओर उठी हुई होती है। बायां पाँव, दायीं टांग से दबा होता है। वैसे तो ये आसन बड़ा ही विशेष है, सभी देवतायें या तो कमलासन में होते हैं या फिर सुखासन में, या फिर खड़े होते हैं, लेकिन एक गणपति जी को ही ऐसे आसन में क्यों

दिखाते हैं? हम इसके आध्यात्मिक रहस्य की ओर चलते हैं...

शरीर विज्ञान के अनुसार हमारा दायां हाथ और दायीं टाँग हमारे मस्तिष्क के बायें भाग से जुड़े होते हैं जबकि बायीं टांग और बाया हाथ हमारे मस्तिष्क के दायें भाग से जुड़ा होता है। कहते हैं कि जो हमारा बायां मस्तिष्क है वो तार्किक होता है, निर्णय लेने वाला होता है, ब्रेव होता है, डिज़िटल होता है, जबकि दायां मस्तिष्क इमोशनल होता है, केयरिंग होता है, लविंग होता है और इंट्यूटिव होता है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो माना जा सकता है कि बायें भाग से जुड़ी हुई दायीं टांग को पृथ्वी से स्पर्श करना संसार तथा इसके तथ्यों से संपर्क बनाये रखने का प्रतीक है। भाव यह है कि व्यक्ति इस बात को मानता है कि संसार बना हुआ है या यह केवल स्वप्न मात्र नहीं है। यहां समस्या होगी और इसे हमें हल करना पड़ेगा। वहीं बायें पाँव का उठे रहना और दायीं टांग से दबे रहना इस बात का सूचक है कि हमें संवेग और आवेग से ऊपर उठना चाहिए अर्थात् अपनी भावनाओं से और पृथ्वी के आकर्षण से ऊपर उठकर अपनी विवेक-शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो सांसारिक मोह-ममता में फंसकर आप सर्वस्व नष्ट कर देते हैं। ऐसे ही किसी भी ज्ञानवान व्यक्ति को अपने इमोशन पर, अपनी फीलिंग पर कंट्रोल करना ज़रूरी है। तभी वो इस संसार में रहते हुए इससे उपराम रह सकता है।

आप अगर देखें तो दूसरी टांग भी जो थोड़ा सा स्पर्श कर रही है, यदि हम इसके एक भाव को लें तो पृथ्वी को थोड़ा सा छूना अर्थात् तैयार रहना। जब चाहें कार्य क्षेत्र में उतर आएं और जब चाहें चले जाएं।

ये तो हो गई पैरों की बात, लेकिन उसमें एक विचित्र बात ये भी दिखाते हैं कि इतना बड़ा गणपति और उसका वाहन इतना छोटा सा चूहा! क्या ये संभव है कि गणपति उसकी सवारी कर सकते हैं? चूहे की एक विशेषता होती है कि कोई भी चीज़ चाहे वो महंगी हो या सस्ती हो, वो कुतर-कुतर करता रहता है। ठीक इसी प्रकार हम मनुष्य हैं जिनको यदि दूसरे शब्दों में कहें तो माया है जो किसी भी बात को चाहे वो कितनी भी मूल्यवान क्यों ना हो, उसके मूल्य को ना देख, उसके अहमियत को खत्म कर देते हैं, अर्थात् कुतरते रहते हैं। वे समझते हैं कि हम तो इस बात को समझने का प्रयास कर रहे हैं या दूसरों से शेयर कर रहे हैं लेकिन वे तो बेसमझी की निशानी है। जबकि ज्ञानवान व्यक्ति इन बातों को अपने काबू में रखता है। इसी का उदाहरण वहां पर आध्यात्मिक रूप से दिखाया गया है कि गणपति ने कुतर-कुतर करने वाले माया रूपी चूहे को अपने वश में कर रखा है।

गणेश की एक तीसरी विधा पर गौर करें तो पायेंगे कि गणेश की दो पत्नियाँ थीं विधि और सिद्धि। इसका आध्यात्मिक अर्थ हमारे हिसाब से क्या हो सकता है? जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच-समझकर कार्य करेगा उसको सिद्धि अवश्य मिलेगी। गणेश को चढ़ाये गये फलों को अगर देखें तो उनके साथ एक केला फल भी होता है। कहा जाता है कि केले के ऊपर के पत्ते को अगर आप हटायें तो नीचे एक नया पत्ता निकल आता है। इस पर एक कहावत भी है कि जैसे `केले के पात-पात में पात, वैसे ज्ञानी के बात-बात में बात।' कहने का भाव यह है कि ज्ञानी पुरुष की बातों में बहुत गहराई होती है।

तो गणेश या गणपति कोई साधारण व्यक्तित्व का परिचायक नहीं है। कहते हैं कि गणपति शिव सुत या शिव के बालक अथवा पुत्र ही का गुणवाचक या कर्त्तव्यवाचक नाम है। किसी भी व्यक्ति का जब दोनों मस्तिष्क (बायां और दायां) बैलेंस होगा तो उससे कोई भी गलती नहीं होगी। परिस्थिति आने से पहले वो उन्हें भाँप लेगा तथा उसपर विजय प्राप्त कर लेगा। इसीलिए गणेश को विघ्नहर्ता का टाइटल दिया। जब तक हम अपने पुराने संस्कार और स्वभाव पर जोकि आज माया के वश हैं, विकारों के वश हैं, उसपर विजय नहीं प्राप्त कर लेते, तब तक हमको भविष्य का सिंहासन नहीं प्राप्त हो सकता।

जयपूर। गवर्नर कल्याण सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सुषमा साथ में है ब्र.कु.चंद्रकला।

रायागडा-ओडिशा। कलेक्टर व डी.एम. जगन्नाथ मोहन्ती को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. श्रीमती।

असंसोल-ओडिशा। प्रसिद्ध पार्श गायक व सांसद बाबुल सुप्रिय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

बाँदा-उ.प्र.। जिलाधिकारी सुरेश कुमार को रक्षाबंधन के पावन पर्व पर आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी।

बठिंडा-पंजाब। एस.डी.एम. वनीत कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु।

नगांव-असम। डिप्युटी कमिश्नर मोनालिसा गोस्वामी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता।